

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

(तृतीय खण्ड)

[उद्योगपर्व और भीष्मपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित)

Vol 3 of 6



गिता प्रेस, गोरखपुर

अनुवादक—

पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'



उद्योगपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
(सेनोद्योगपर्व)					
१-राजा विराटकी सभामें भगवान् श्रीकृष्णका भाषण	...	२०३९	१८-इन्द्रका स्वर्गमें जाकर अपने राज्यका पालन करना; शल्यका युधिष्ठिरको आश्वासन देना और उनसे विदा लेकर दुर्योधनके यहाँ जाना	...	२०८२
२-बलरामजीका भाषण	...	२०४२	१९-युधिष्ठिर और दुर्योधनके यहाँ सहायताके लिये आयी हुई सेनाओंका संक्षिप्त विवरण	...	२०८३
३-साल्वकिके वीरोचित उद्धार	...	२०४३	(संजययानपर्व)		
४-राजा द्रुपदकी सम्मति	...	२०४५	२०-द्रुपदके पुरोहितका कौरवसभामें भाषण	...	२०८६
५-भगवान् श्रीकृष्णका द्वारकागमन; विराट और द्रुपदके संदेशसे राजाओंका पाण्डवपक्षकी ओरसे युद्धके लिये आगमन	...	२०४७	२१-भीष्मके द्वारा द्रुपदके पुरोहितकी बातका समर्थन करते हुए अर्जुनकी प्रशंसा करना; इसके विरुद्ध कर्णके आक्षेपपूर्ण वचन तथा धृतराष्ट्रद्वारा भीष्मकी बातका समर्थन करते हुए दूतको सम्मानित करके विदा करना	...	२०८७
६-द्रुपदका पुरोहितको दौत्यकर्मके लिये अनुमति देना तथा पुरोहितका हस्तिनापुरको प्रस्थान	...	२०४८	२२-धृतराष्ट्रका संजयसे पाण्डवोंके प्रभाव-प्रतिभाका वर्णन करते हुए उसे संदेश देकर पाण्डवोंके पास भेजना	...	२०८९
७-श्रीकृष्णका दुर्योधन तथा अर्जुन दोनोंको सहायता देना	...	२०५०	२३-संजयका युधिष्ठिरसे मिलकर उनकी कुशल पूछना एवं युधिष्ठिरका संजयसे कौरवपक्षका कुशल-समाचार पूछते हुए उससे सारगर्भित प्रश्न करना	...	२०९४
८-शल्यका दुर्योधनके सत्कारसे प्रसन्न हो उसे वर देना और युधिष्ठिरसे मिलकर उन्हें आश्वासन देना	...	२०५३	२४-संजयका युधिष्ठिरको उनके प्रदनोंका उत्तर देते हुए उन्हें राजा धृतराष्ट्रका संदेश सुनानेकी प्रतिज्ञा करना	...	२०९७
९-इन्द्रके द्वारा त्रिशिराका वध; वृत्रासुरकी उत्पत्ति; उसके साथ इन्द्रका युद्ध तथा देवताओंकी पराजय	...	२०५७	२५-संजयका युधिष्ठिरको धृतराष्ट्रका संदेश सुनाना एवं अपनी ओरसे भी शान्तिके लिये प्रार्थना करना	...	२०९८
१०-इन्द्रसहित देवताओंका भगवान् विष्णुकी शरणमें जाना और इन्द्रका उनके आशानुसार वृत्रासुरसे संधि करके अवसर पाकर उसे मारना एवं ब्रह्महत्याके भयसे जलमें छिपना	...	२०६२	२६-युधिष्ठिरका संजयको इन्द्रप्रस्थ लौटानेसे ही शान्ति होना सम्भव बतलाना	...	२१००
११-देवताओं तथा ऋषियोंके अनुरोधसे राजा नहुषका इन्द्रके पदपर अभिषिक्त होना एवं काम-भोगमें आसक्त होना और चिन्तामें पड़ी हुई इन्द्राणीको बृहस्पतिक आश्वासन	...	२०६६	२७-संजयका युधिष्ठिरको युद्धमें दोषकी सम्भावना बतलाकर उन्हें युद्धसे उपरत करनेका प्रयत्न करना	...	२१०३
१२-देवता-नहुष-संवाद; बृहस्पतिके द्वारा इन्द्राणीकी रक्षा तथा इन्द्राणीका नहुषके पास कुछ समयकी अवधि माँगनेके लिये जाना	...	२०६८	२८-संजयको युधिष्ठिरका उत्तर	...	२१०६
१३-नहुषका इन्द्राणीको कुछ कालकी अवधि देना; इन्द्रका ब्रह्महत्यासे उद्धार तथा शर्चाद्वारा रात्रिदेवीकी उपासना	...	२०७१	२९-संजयकी बातोंका प्रत्युत्तर देते हुए श्रीकृष्णका उसे धृतराष्ट्रके लिये चेतावनी देना	...	२१०८
१४-उपश्रुति देवीकी सहायतासे इन्द्राणीकी इन्द्रसे भेंट	...	२०७३	३०-संजयकी विदाई तथा युधिष्ठिरका संदेश	...	२११५
१५-इन्द्रकी आज्ञासे इन्द्राणीके अनुरोधपर नहुषका ऋषियोंको अपना वाहन बनाना तथा बृहस्पति और अग्निका संवाद	...	२०७४	३१-युधिष्ठिरका मुख्य-मुख्य कुरुवंशियोंके प्रति संदेश	...	२१२०
१६-बृहस्पतिद्वारा अग्नि और इन्द्रका स्तवन तथा बृहस्पति एवं लोकपालोंकी इन्द्रसे बातचीत	...	२०७७	३२-अर्जुनद्वारा कौरवोंके लिये संदेश देना; संजयका हस्तिनापुर जा धृतराष्ट्रसे मिलकर उन्हें युधिष्ठिरका कुशल-समाचार कहकर धृतराष्ट्रके कार्यकी निन्दा करना	...	२१२९
१७-अगस्त्यजीका इन्द्रसे नहुषके पतनका वृत्तान्त बताना	...	२०८०	(प्रजागरपर्व)		
			३३-धृतराष्ट्र-विदुर-संवाद	...	२१२६
			३४-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीके नीतियुक्त वचन	...	२१३६

- ३५-विदुरके द्वारा केशिनीके लिये सुधन्वाके साथ
विरोचनके विवादका वर्णन करते हुए
धृतराष्ट्रको धर्मोपदेश ... २१४२
- ३६-दत्तात्रेय और साध्य देवताओंके संवादका
उल्लेख करके महाकुलीन लोगोंका लक्षण
बतलाते हुए विदुरका धृतराष्ट्रको समझाना ... २१४८
- ३७-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका हितोपदेश ... २१५४
- ३८-विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश ... २१६०
- ३९-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश २१६३
- ४०-धर्मकी महत्ताका प्रतिपादन तथा ब्राह्मण आदि
चारों वर्णोंके धर्मका संक्षिप्त वर्णन ... २१६९

(सनत्सुजातपर्व)

- ४१-विदुरजीके द्वारा स्मरण करनेपर आये हुए
सनत्सुजात ऋषिसे धृतराष्ट्रको उपदेश देनेके
लिये उनकी प्रार्थना ... २१७२
- ४२-सनत्सुजातजीके द्वारा धृतराष्ट्रके विविध प्रश्नों-
का उत्तर ... २१७३
- ४३-ब्रह्मज्ञानमें उपयोगी मौन, तप, त्याग, अग्रमाद
एवं दम आदिके लक्षण तथा मदादि दोषोंका
निरूपण ... २१७८
- ४४-ब्रह्मचर्य तथा ब्रह्मका निरूपण ... २१८३
- ४५-गुण-दोषोंके लक्षणोंका वर्णन और ब्रह्मविद्याका
प्रतिपादन ... २१८६
- ४६-परमात्माके स्वरूपका वर्णन और योगीजनोंके
द्वारा उनके साक्षात्कारका प्रतिपादन ... २१८८

(यानसंधिपर्व)

- ४७-पाण्डवोंके यहाँसे लौटे हुए संजयका कौरव-
सभामें आगमन ... २१९३
- ४८-संजयका कौरवसभामें अर्जुनका संदेश सुनाना २१९४
- ४९-भीष्मका दुर्योधनको संधिके लिये समझाते
हुए श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महिमा बताना
एवं कर्णपर आक्षेप करना, कर्णकी आत्म-
प्रशंसा, भीष्मके द्वारा उसका पुनः उपहास
एवं द्रोणाचार्यद्वारा भीष्मजीके कथनका
अनुमोदन ... २२०६
- ५०-संजयद्वारा युधिष्ठिरके प्रधान सहायकोंका वर्णन २२१०
- ५१-भीष्मसेनके पराक्रमसे डरे हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१४
- ५२-धृतराष्ट्रद्वारा अर्जुनसे प्राप्त होनेवाले भयका
वर्णन ... २२१८
- ५३-कौरवसभामें धृतराष्ट्रका युद्धसे भय दिखाकर
शान्तिके लिये प्रस्ताव करना ... २२२०
- ५४-संजयका धृतराष्ट्रको उनके दोष बताते हुए
दुर्योधनपर शासन करनेकी सलाह देना ... २२२१
- ५५-धृतराष्ट्रको धैर्य देते हुए दुर्योधनद्वारा अपने
उत्कर्ष और पाण्डवोंके अपकर्षका वर्णन ... २२२३

- ५६-संजयद्वारा अर्जुनके ध्वज एवं अश्वोंका तथा
युधिष्ठिर आदिके घोड़ोंका वर्णन ... २२२७
- ५७-संजयद्वारा पाण्डवोंकी युद्धविषयक तैयारीका
वर्णन, धृतराष्ट्रका विलाप, दुर्योधनद्वारा
अपनी प्रबलताका प्रतिपादन, धृतराष्ट्रका
उसपर अविश्वास तथा संजयद्वारा धृष्टद्युम्नकी
शक्ति एवं संदेशका कथन ... २२२९
- ५८-धृतराष्ट्रका दुर्योधनको संधिके लिये
समझाना, दुर्योधनका अहंकारपूर्वक पाण्डवों-
से युद्ध करनेका ही निश्चय तथा धृतराष्ट्रका
अन्य योद्धाओंको युद्धसे भय दिखाना ... २२३३
- ५९-संजयका धृतराष्ट्रके पूछनेपर उन्हें श्रीकृष्ण
और अर्जुनके अन्तःपुरमें कहे हुए संदेश
सुनाना ... २२३६
- ६०-धृतराष्ट्रके द्वारा कौरव-पाण्डवोंकी शक्तिका
तुलनात्मक वर्णन ... २२३८
- ६१-दुर्योधनद्वारा आत्मप्रशंसा ... २२४०
- ६२-कर्णकी आत्मप्रशंसा, भीष्मके द्वारा उसपर
आक्षेप, कर्णका सभा त्यागकर जाना और
भीष्मका उसके प्रति पुनः आक्षेपयुक्त वचन
कहना ... २२४२
- ६३-दुर्योधनद्वारा अपने पक्षकी प्रबलताका वर्णन
करना और विदुरका दमकी महिमा बताना २२४४
- ६४-विदुरका कौटुम्बिक कलहसे हानि बताते हुए
धृतराष्ट्रको संधिकी सलाह देना ... २२४६
- ६५-धृतराष्ट्रका दुर्योधनको समझाना ... २२४८
- ६६-संजयका धृतराष्ट्रको अर्जुनका संदेश सुनाना २२५०
- ६७-धृतराष्ट्रके पास व्यास और गान्धारीका
आगमन तथा व्यासजीका संजयको श्रीकृष्ण
और अर्जुनके सम्बन्धमें कुछ कहनेका आदेश २२५१
- ६८-संजयका धृतराष्ट्रको भगवान् श्रीकृष्णकी
महिमा बतलाना ... २२५२
- ६९-संजयका धृतराष्ट्रको श्रीकृष्ण-प्राप्ति एवं
तत्त्वज्ञानका साधन बताना ... २२५३
- ७०-भगवान् श्रीकृष्णके विभिन्न नामोंकी
व्युत्पत्तियोंका कथन ... २२५५
- ७१-धृतराष्ट्रके द्वारा भगवद्-गुणगान ... २२५७

(भगवद्गीतापर्व)

- ७२-युधिष्ठिरका श्रीकृष्णसे अपना अभिप्राय
निवेदन करना, श्रीकृष्णका शान्तिदूत बनकर
कौरवसभामें जानेके लिये उद्यत होना और
इस विषयमें उन दोनोंका वार्तालाप ... २२५८
- ७३-श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको युद्धके लिये
प्रोत्साहन देना ... २२६५

- ७४-भीमसेनका शान्तिविषयक प्रस्ताव ... २२६८
- ७५-श्रीकृष्णका भीमसेनको उत्तेजित करना ... २२७०
- ७६-भीमसेनका उत्तर ... २२७२
- ७७-श्रीकृष्णका भीमसेनको आश्वासन देना ... २२७३
- ७८-अर्जुनका कथन ... २२७५
- ७९-श्रीकृष्णका अर्जुनको उत्तर देना ... २२७६
- ८०-नकुलका निवेदन ... २२७८
- ८१-युद्धके लिये सहदेव तथा सात्यकिकी सम्मति और समस्त योद्धाओंका समर्थन ... २२७९
- ८२-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे अपना दुःख सुनाना और श्रीकृष्णका उसे आश्वासन देना ... २२८०
- ८३-श्रीकृष्णका हस्तिनापुरको प्रस्थान, युधिष्ठिरका माता कुन्ती एवं कौरवोंके लिये संदेश तथा श्रीकृष्णको मार्गमें दिव्य महर्षियोंका दर्शन २२८३
- ८४-मार्गके शुभाशुभ शकुनोंका वर्णन तथा मार्गमें लोगोंद्वारा सत्कार पाते हुए श्रीकृष्णका वृकस्थल पहुँचकर वहाँ विश्राम करना २२८५
- ८५-दुर्योधनका धृतराष्ट्र आदिकी अनुमतिसे श्रीकृष्णके स्वागत-सत्कारके लिये मार्गमें विश्राम-स्थान बनवाना ... २२९१
- ८६-धृतराष्ट्रका भगवान् श्रीकृष्णकी अगवानी करके उन्हें भेंट देने एवं दुःशासनके महलमें ठहरानेका विचार प्रकट करना ... २२९३
- ८७-विदुरका धृतराष्ट्रकी श्रीकृष्णकी आज्ञाका पालन करनेके लिये समझाना ... २२९४
- ८८-दुर्योधनका श्रीकृष्णके विषयमें अपने विचार कहना एवं उसकी कुमन्त्रणासे कुपित हो भीष्मजीका सभासे उठ जाना ... २२९५
- ८९-श्रीकृष्णका स्वागत, धृतराष्ट्र तथा विदुरके घरोंपर उनका आतिथ्य ... २२९७
- ९०-श्रीकृष्णका कुन्तीके समीप जाना एवं युधिष्ठिरका कुशल-समाचार पूछकर अपने दुःखोंका स्मरण करके विलाप करती हुई कुन्तीको आश्वासन देना ... २३००
- ९१-श्रीकृष्णका दुर्योधनके घर जाना एवं उसके निमन्त्रणको अस्वीकार करके विदुरजीके घरपर भोजन करना ... २३०७
- ९२-विदुरजीका धृतराष्ट्रपुत्रोंकी दुर्भावना बताकर श्रीकृष्णको उनके कौरवसभामें जानेका अनौचित्य बतलाना ... २३१०
- ९३-श्रीकृष्णका कौरव-पाण्डवोंमें संधिस्थापनके प्रयत्नका औचित्य बताना ... २३१२
- ९४-दुर्योधन एवं शकुनिके द्वारा बुलये जानेपर भगवान् श्रीकृष्णका रथपर बैठकर प्रस्थान एवं कौरवसभामें प्रवेश और स्वागतके पश्चात् आसनग्रहण ... २३१४

- ९५-कौरवसभामें श्रीकृष्णका प्रभावशाली भाषण २३१९
- ९६-परशुरामजीका दम्भोद्धवकी कथाद्वारा नरनारायणस्वरूप अर्जुन और श्रीकृष्णका महत्त्व वर्णन करना ... २३२३
- ९७-कण्व मुनिका दुर्योधनको संधिके लिये समझाते हुए मातलिका उपाख्यान आरम्भ करना ... २३२७
- ९८-मातलिका अपनी पुत्रीके लिये वर खोजनेके निमित्त नारदजीके साथ वरुणलोकमें भ्रमण करते हुए अनेक आश्चर्यजनक वस्तुएँ देखना २३२९
- ९९-नारदजीके द्वारा पाताललोकका प्रदर्शन ... २३३१
- १००-हिरण्यपुरका दिग्दर्शन और वर्णन ... २३३२
- १०१-गरुडलोक तथा गरुडकी संतानोंका वर्णन ... २३३४
- १०२-सुरभि और उसकी संतानोंके साथ रसातलके सुखका वर्णन ... २३३५
- १०३-नागलोकके नागोंका वर्णन और मातलिका नागकुमार सुमुखके साथ अपनी कन्याको व्याहनेका निश्चय ... २३३६
- १०४-नारदजीका नागराज आर्यकके सम्मुख सुमुखके साथ मातलिकी कन्याके विवाहका प्रस्ताव एवं मातलिका नारदजी, सुमुख एवं आर्यकके साथ इन्द्रके पास आकर उनके द्वारा सुमुखको दीर्घायु प्रदान कराना तथा सुमुखगुणकेशी-विवाह ... २३३८
- १०५-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुडका गर्वभञ्जन तथा दुर्योधनद्वारा कण्वमुनिके उपदेशकी अवहेलना ... २३४०
- १०६-नारदजीका दुर्योधनको समझाते हुए धर्मराजके द्वारा विश्वामित्रजीकी परीक्षा तथा गालवके विश्वामित्रसे गुरुदक्षिणा माँगनेके लिये हठका वर्णन ... २३४३
- १०७-गालवकी चिन्ता और गरुडका आकर उन्हें आश्वासन देना ... २३४५
- १०८-गरुडका गालवसे पूर्व दिशाका वर्णन करना २३४६
- १०९-दक्षिण दिशाका वर्णन ... २३४८
- ११०-पश्चिम दिशाका वर्णन ... २३४९
- १११-उत्तर दिशाका वर्णन ... २३५१
- ११२-गरुडकी पीठपर बैठकर पूर्व दिशाकी ओर जाते हुए गालवका उनके वेगसे व्याकुल होना २३५३
- ११३-ऋषभ पर्वतके शिखरपर महर्षि गालव और गरुडकी तपस्विनी शाण्डिलीसे भेंट तथा गरुड और गालवका गुरुदक्षिणा चुकानेके विषयमें परस्पर विचार ... २३५४
- ११४-गरुड और गालवका राजा ययातिके यहाँ जाकर गुरुको देनेके लिये द्यामकर्ण धोड़ोंकी याचना करना ... २३५६

- ११५-राजा ययातिका गालवको अपनी कन्या देना और गालवका उसे लेकर अयोध्या-नरेशके यहाँ जाना ... २३५८
- ११६-हर्षश्वाक दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देकर ययातिकन्याके गर्भसे वसुमना नामक पुत्र उत्पन्न करना और गालवका इस कन्याके साथ वहाँसे प्रस्थान ... २३५९
- ११७-दिवोदासका ययातिकन्या माधवीके गर्भसे प्रतर्दन नामक पुत्र उत्पन्न करना ... २३६१
- ११८-उशीनरका ययातिकन्या माधवीके गर्भसे शिवि नामक पुत्र उत्पन्न करना; गालवका उस कन्याको साथ लेकर जाना और मार्गमें गरुड़का दर्शन करना ... २३६२
- ११९-गालवका छः सौ घोड़ोंके साथ माधवीको विश्वामित्रजीकी सेवामें देना और उनके द्वारा उसके गर्भसे अश्वक नामक पुत्रकी उत्पत्ति होनेके बाद उस कन्याको ययातिके यहाँ लौटा देना ... २३६४
- १२०-माधवीका वनमें जाकर तप करना तथा ययातिका स्वर्गमें जाकर सुखभोगके पश्चात् मोहवश तेजोहीन होना ... २३६५
- १२१-ययातिका स्वर्गलोकसे पतन और उनके दौहित्रों, पुत्री तथा गालव मुनिका उन्हें पुनः स्वर्गलोकमें पहुँचानेके लिये अपना-अपना पुण्य देनेके लिये उद्यत होना ... २३६७
- १२२-सत्सङ्ग एवं दौहित्रोंके पुण्यदानसे ययातिका पुनः स्वर्गारोहण ... २३६९
- १२३-स्वर्गलोकमें ययातिका स्वागत; ययातिके पूछनेपर ब्रह्माजीका अभिमानको ही पतनका कारण बताना तथा नारदजीका दुर्योधनको समझाना ... २३७०
- १२४-धृतराष्ट्रके अनुरोधसे भगवान् श्रीकृष्णका दुर्योधनको समझाना ... २३७२
- १२५-भीष्म, द्रोण, विदुर और धृतराष्ट्रका दुर्योधनको समझाना ... २३७७
- १२६-भीष्म और द्रोणका दुर्योधनको पुनः समझाना २३७९
- १२७-श्रीकृष्णको दुर्योधनका उत्तर; उसका पाण्डवोंको राज्य न देनेका निश्चय ... २३८०
- १२८-श्रीकृष्णका दुर्योधनको फटकारना और उसे कुपित होकर सभासे जाते देख उसे कैद करनेकी सलाह देना ... २३८२
- १२९-धृतराष्ट्रका गान्धारीको बुलाना और उसका दुर्योधनको समझाना ... २३८५
- १३०-दुर्योधनके षडयन्त्रका सात्यकिद्वारा भंडा-फोड़; श्रीकृष्णकी सिंहगर्जना तथा धृतराष्ट्र और विदुरका दुर्योधनको पुनः समझाना २३८९
- १३१-भगवान् श्रीकृष्णका विश्वरूप दर्शन कराकर कौरवसभासे प्रस्थान ... २३९३
- १३२-श्रीकृष्णके पूछनेपर कुन्तीका उन्हें पाण्डवोंसे कहनेके लिये संदेश देना ... २३९५
- १३३-कुन्तीके द्वारा विदुलोपाख्यानका आरम्भ; विदुलका रणभूमिसे भागकर आये हुए अपने पुत्रको कड़ी फटकार देकर पुनः युद्धके लिये उत्साहित करना ... २३९८
- १३४-विदुलका अपने पुत्रको युद्धके लिये उत्साहित करना ... २४०१
- १३५-विदुल और उसके पुत्रका संवाद—विदुलके द्वारा कार्यमें सफलता प्राप्त करने तथा शत्रुवशीकरणके उपायोंका निर्देश ... २४०४
- १३६-विदुलके उपदेशसे उसके पुत्रका युद्धके लिये उद्यत होना ... २४०७
- १३७-कुन्तीका पाण्डवोंके लिये संदेश देना और श्रीकृष्णका उनसे विदा लेकर उपप्लव्य नगरमें जाना ... २४०९
- १३८-भीष्म और द्रोणका दुर्योधनको समझाना २४११
- १३९-भीष्मसे वार्तालाप आरम्भ करके द्रोणाचार्यका दुर्योधनको पुनः संधिके लिये समझाना ... २४१३
- १४०-भगवान् श्रीकृष्णका कर्णको पाण्डवपक्षमें आ जानेके लिये समझाना ... २४१५
- १४१-कर्णका दुर्योधनके पक्षमें रहनेके निश्चित विचारका प्रतिपादन करते हुए समरयज्ञके रूपकका वर्णन करना ... २४१६
- १४२-भगवान् श्रीकृष्णका कर्णसे पाण्डवपक्षकी निश्चित विजयका प्रतिपादन ... २४२०
- १४३-कर्णके द्वारा पाण्डवोंकी विजय और कौरवोंकी पराजय सूचित करनेवाले लक्षणों एवं अपने स्वप्नका वर्णन ... २४२१
- १४४-विदुरकी बात सुनकर युद्धके भावी दुष्परिणामसे व्यथित हुई कुन्तीका बहुत सोच-विचारके बाद कर्णके पास जाना ... २४२५
- १४५-कुन्तीका कर्णको अपना प्रथम पुत्र बताकर उससे पाण्डवपक्षमें मिल जानेका अनुरोध २४२७
- १४६-कर्णका कुन्तीको उत्तर तथा अर्जुनको छोड़कर शेष चारों पाण्डवोंको न मारनेकी प्रतिज्ञा ... २४२८
- १४७-युधिष्ठिरके पूछनेपर श्रीकृष्णका कौरव-सभामें व्यक्त किये हुए भीष्मजीके वचन सुनाना २४३०
- १४८-द्रोणाचार्य, विदुर तथा गान्धारीके युक्तियुक्त एवं महत्वपूर्ण वचनोंका भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा कथन ... २४३३

१४९-दुर्योधनके प्रति धृतराष्ट्रके युक्तिसंगत वचन—
पाण्डवोंको आधा राज्य देनेके लिये आदेश... २४३६

१५०-श्रीकृष्णका कौरवोंके प्रति साम, दान और
भेदनीतिके प्रयोगकी असफलता बताकर
दण्डके प्रयोगपर जोर देना ... २४३८

(सैन्यनिर्याणपर्व)

१५१-पाण्डवपक्षके सेनापतिका चुनाव तथा
पाण्डवसेनाका कुरुक्षेत्रमें प्रवेश ... २४३९

१५२-कुरुक्षेत्रमें पाण्डवसेनाका पड़ाव तथा
शिविर-निर्माण ... २४४४

१५३-दुर्योधनका सेनाको सुसज्जित होने और
शिविर निर्माण करनेके लिये आज्ञा देना
तथा सैनिकोंकी रणयात्राके लिये तैयारी २४४५

१५४-युधिष्ठिरका भगवान् श्रीकृष्णसे अपने
समयोचित कर्तव्यके विषयमें पूछना;
भगवान्का युद्धको ही कर्तव्य बताना तथा इस
विषयमें युधिष्ठिरका संताप और अर्जुनद्वारा
श्रीकृष्णके वचनोंका समर्थन ... २४४७

१५५-दुर्योधनके द्वारा सेनाओंका विभाजन और
पृथक्-पृथक् अश्वहिणियोंके सेनापतियोंका
अभिषेक ... २४४९

१५६-दुर्योधनके द्वारा भीष्मजीका प्रधान-सेनापतिके
पदपर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर
शिविर-निर्माण ... २४५१

१५७-युधिष्ठिरके द्वारा अपने सेनापतियोंका
अभिषेक; यदुवंशियोंसहित बलरामजीका
आगमन तथा पाण्डवोंसे विदा लेकर
उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान ... २४५४

१५८-रुक्मीका सहायता देनेके लिये आना; परंतु
पाण्डव और कौरव दोनों पक्षोंके द्वारा
कोरा उत्तर पाकर लौट जाना ... २४५६

१५९-धृतराष्ट्र और संजयका संवाद ... २४५९

(उल्कदूतागमनपर्व)

१६०-दुर्योधनका उल्कको दूत बनाकर पाण्डवोंके
पास भेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश देना २४६०

१६१-पाण्डवोंके शिविरमें पहुँचकर उल्कका भरी
सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना ... २४६८

१६२-पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनको उसके
संदेशका उत्तर ... २४७१

१६३-पाँचों पाण्डवों, विराट, द्रुपद, शिखण्डी
और धृष्टद्युम्नका संदेश लेकर उल्कका लौटना
और उल्ककी बात सुनकर दुर्योधनका
सेनाको युद्धके लिये तैयार होनेका
आदेश देना ... २४७५

१६४-पाण्डवसेनाका युद्धके मैदानमें जाना और
धृष्टद्युम्नके द्वारा योद्धाओंकी अपने-अपने योग्य
विपक्षियोंके साथ युद्ध करनेके लिये नियुक्ति २४७८

(रथातिरथसंख्यानपर्व)

१६५-दुर्योधनके पूछनेपर भीष्मका कौरवपक्षके
रथियों और अतिरथियोंका परिचय देना ... २४७९

१६६-कौरवपक्षके रथियोंका परिचय ... २४८१

१६७-कौरवपक्षके रथी, महारथी और
अतिरथियोंका वर्णन ... २४८३

१६८-कौरवपक्षके रथियों और अतिरथियोंका
वर्णन; कर्ण और भीष्मका रोपपूर्वक
संवाद तथा दुर्योधनद्वारा उसका निवारण ... २४८५

१६९-पाण्डवपक्षके रथी आदिका एवं उनकी
महिमाका वर्णन ... २४८८

१७०-पाण्डवपक्षके रथियों और महारथियोंका
वर्णन तथा विराट और द्रुपदकी प्रशंसा ... २४८९

१७१-पाण्डवपक्षके रथी, महारथी एवं अतिरथी
आदिका वर्णन ... २४९०

१७२-भीष्मका पाण्डवपक्षके अतिरथी वीरोंका
वर्णन करते हुए शिखण्डी और पाण्डवोंका
वध न करनेका कथन ... २४९२

(अम्बोपाख्यानपर्व)

१७३-अम्बोपाख्यानका आरम्भ—भीष्मजीके द्वारा
काशिराजकी कन्याओंका अपहरण ... २४९३

१७४-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट
करके उनके पास जानेके लिये भीष्मसे
आज्ञा माँनना ... २४९५

१७५-अम्बाका शाल्वके यहाँ जाना और उससे
परित्यक्त होकर तापसोंके आश्रममें आना;
यहाँ शैलावत्य और अम्बाका संवाद ... २४९५

१७६-तापसोंके आश्रममें राजर्षि होत्रवाहन और
अकृतव्रणका आगमन तथा उनसे अम्बाकी
वातचीत ... २४९८

१७७-अकृतव्रण और परशुरामजीकी अम्बासे
वातचीत ... २५०२

१७८-अम्बा और परशुरामजीका संवाद;
अकृतव्रणकी सलाह; परशुराम और भीष्मकी
रोपपूर्ण वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके
लिये कुरुक्षेत्रमें उतरना ... २५०४

१७९-संकल्पनिर्मित रथपर आरूढ़ परशुरामजीके
साथ भीष्मका युद्ध प्रारम्भ करना ... २५१०

१८०-भीष्म और परशुरामका घोर युद्ध ... २५१२

१८१-भीष्म और परशुरामका युद्ध ... २५१५

१८२-भीष्म और परशुरामका युद्ध ... २५१६

१८३-भीष्मको अष्टवसुओंसे प्रस्थापनास्त्रकी प्राप्ति	२५१८	१९०-हिरण्यवर्माके आक्रमणके भयसे धृतराष्ट्र हुए	
१८४-भीष्म तथा परशुरामजीका एक दूसरेपर		द्रुपदका अपनी महारानीसे संकटनिवारणका	
शक्ति और ब्रह्मास्त्रका प्रयोग	२५१९	उपाय पूछना	२५२९
१८५-देवताओंके मना करनेसे भीष्मका प्रस्थापना-		१९१-द्रुपदपत्नीका उत्तर; द्रुपदके द्वारा नगररक्षाकी	
स्त्रको प्रयोगमें न लाना तथा पितर, देवता		व्यवस्था और देवाराधन तथा शिखण्डिनीका	
और गङ्गाके आग्रहसे भीष्म और		वनमें जाकर स्थूणाकर्ण नामक यक्षसे अपने	
परशुरामके युद्धकी समाप्ति	२५२०	दुःखनिवारणके लिये प्रार्थना करना	२५३०
१८६-अम्बाकी कठोर तपस्या	२५२३	१९२-शिखण्डीको पुरुषत्वकी प्राप्ति; द्रुपद और	
१८७-अम्बाका द्वितीय जन्ममें पुनः तप करना		हिरण्यवर्माकी प्रसन्नता, स्थूणाकर्णको कुवेरका	
और महादेवजीसे अभीष्ट वरकी प्राप्ति		शाप तथा भीष्मका शिखण्डीको न	
तथा उसका चिताकी आगमें प्रवेश	२५२५	मारनेका निश्चय	२५३२
१८८-अम्बाका राजा द्रुपदके यहाँ कन्याके रूपमें		१९३-दुर्योधनके पूछनेपर भीष्म आदिके द्वारा	
जन्म, राजा तथा रानीका उसे पुत्ररूपमें		अपनी-अपनी शक्तिका वर्णन	२५३७
प्रसिद्ध करके उसका नाम शिखण्डी रखना	२५२६	१९४-अर्जुनके द्वारा अपनी, अपने सहायकोंकी	
१८९-शिखण्डीका विवाह तथा उसके स्त्री होनेका		तथा युधिष्ठिरकी भी शक्तिका परिचय देना	२५३८
समाचार पाकर उसके श्वशुर दशार्णराजका		१९५-कौरवसेनाका रणके लिये प्रस्थान	२५३९
महान् कोप	२५२८	१९६-पाण्डवसेनाका युद्धके लिये प्रस्थान	२५४१

चित्र-सूची

(रंगीन)

१-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका		१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवोंका	
भाषण	२०३९	संदेश सुना रहे हैं	२२१६
२-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्डवोंसे भेंट	२०९८	१४-भीमसेनका बल बखानते हुए	
३-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे खुले केशोंकी		धृतराष्ट्रका विलाप	२२१६
बात याद रखनेका अनुरोध	२१९३	१५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत	२२९९
४-हस्तिनापुरके मार्गमें ऋषियोंका		१६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश	२३१७
आकर श्रीकृष्णसे मिलना	२२८७	१७-गोमाता सुरभि	२३३५
५-कौरवसभामें विराट् रूप	२३९३	१८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुडका	

(सादा)

६-दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णसे युद्धके		१९-ययातिका स्वर्गारोहण	२३७०
लिये सहायता माँगना	२०५०	२०-दुर्योधनको गान्धारीकी फटकार	२३८६
७-नहुषका स्वर्गसे पतन	२०८०	२१-भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं	२४१५
८-आकाशचारी भगवान् सूर्यदेव	२१०९	२२-पाण्डवोंके डेरमें बलरामजी	२४५५
९-विदुर और धृतराष्ट्र	२१२६	२३-पाण्डवोंकी विशाल सेना	२४७८
१०-प्रह्लादजीका न्याव	२१४५	२४-भीष्म-दुर्योधन-संवाद	२४८०
११-आत्रेय मुनि और साध्यगण	२१४५	२५-पाण्डव-सेनापति धृष्टद्युम्न	२४९०
१२-श्रीसनत्सुजात और महाराज धृतराष्ट्र	२१७३	२६-भीष्म और परशुरामके युद्धमें नारदजी-	
		द्वारा बीच-बचाव	२५२१
		२७-(६० लाइन चित्र फरमोंमें)	

भीष्मपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
(जम्बूखण्डविनिर्माणपर्व)					
१-	कुरुक्षेत्रमें उभय पक्षके सैनिकोंकी स्थिति तथा युद्धके नियमोंका निर्माण	... २५४३	१७-	कौरवमहाराथियोंका युद्धके लिये आगे बढ़ना तथा उनके व्यूह, वाहन और ध्वज आदिका वर्णन	... २५८२
२-	वेदव्यासजीके द्वारा संजयको दिव्य दृष्टिका दान तथा भयसूचक उत्पातोंका वर्णन	... २५४५	१८-	कौरवसेनाका कोलाहल तथा भीष्मके रक्षकोंका वर्णन	... २५८५
३-	व्यासजीके द्वारा अमङ्गलसूचक उत्पातों तथा विजयसूचक लक्षणोंका वर्णन	... २५४७	१९-	व्यूहनिर्माणके विषयमें युधिष्ठिर और अर्जुनकी बातचीत, अर्जुनद्वारा वज्रव्यूहकी रचना, भीमसेनकी अध्यक्षतामें सेनाका आगे बढ़ना	२५८६
४-	धृतराष्ट्रके पूछनेपर संजयके द्वारा भूमिके महत्त्वका वर्णन	... २५५३	२०-	दोनों सेनाओंकी स्थिति तथा कौरवसेनाका अभियान	... २५८९
५-	पञ्चमहाभूतों तथा सुदर्शनद्वीपका संक्षिप्त वर्णन	... २५५५	२१-	कौरवसेनाको देखकर युधिष्ठिरका विषाद करना और 'श्रीकृष्णकी कृपासे ही विजय होती है' यह कहकर अर्जुनका उन्हें आश्वासन देना	... २५९१
६-	सुदर्शनके वर्ष, पर्वत, मेरुगिरि, गङ्गानदी तथा शशाकृतिका वर्णन	... २५५६	२२-	युधिष्ठिरकी रणयात्रा, अर्जुन और भीमसेनकी प्रशंसा तथा श्रीकृष्णका अर्जुनसे कौरवसेनाको मारनेके लिये कहना	... २५९२
७-	उत्तर कुरु, भद्राश्ववर्ष तथा मात्स्यवान्का वर्णन	... २५५९	२३-	अर्जुनके द्वारा दुर्गादेवीकी स्तुति, वरप्राप्ति और अर्जुनकृत दुर्गास्तवनके पाठकी महिमा	२५९४
८-	रमणक, हिरण्यक, शृङ्गवान् पर्वत तथा ऐरावतवर्षका वर्णन	... २५६१	२४-	सैनिकोंके हर्ष और उत्साहके विषयमें धृतराष्ट्र और संजयका संवाद	... २५९६
९-	भारतवर्षकी नदियों, देशों तथा जनपदोंके नाम और भूमिका महत्त्व	... २५६३			
१०-	भारतवर्षमें युगोंके अनुसार मनुष्योंकी आयु तथा गुणोंका निरूपण	... २५६६			

(भूमिपर्व)

११-	शाकद्वीपका वर्णन	... २५६७
१२-	कुश, क्रौञ्च और पुष्कर आदि द्वीपोंका तथा राहु, सूर्य एवं चन्द्रमाके प्रमाणका वर्णन	२५७०

(श्रीमद्भगवद्गीतापर्व)

१३-	संजयका युद्धभूमिसे लौटकर धृतराष्ट्रको भीष्मकी मृत्युका समाचार सुनाना	... २५७३
१४-	धृतराष्ट्रका विलाप करते हुए भीष्मजीके मारे जानेकी घटनाको विस्तारपूर्वक जाननेके लिये संजयसे प्रश्न करना	... २५७४
१५-	संजयका युद्धके वृत्तान्तका वर्णन आरम्भ करना—दुर्योधनका दुःशासनको भीष्मकी रक्षाके लिये समुचित व्यवस्था करनेका आदेश	२५७९
१६-	दुर्योधनकी सेनाका वर्णन	... २५८०

२५-(श्रीमद्भगवद्गीतायां प्रथमोऽध्यायः)

दोनों सेनाओंके प्रधान-प्रधान वीरों एवं शङ्खध्वनिका वर्णन तथा स्वजनवधके पापसे भयभीत हुए अर्जुनका विषाद ... २५९७

२६-(श्रीमद्भगवद्गीतायां द्वितीयोऽध्यायः)

अर्जुनको युद्धके लिये उत्साहित करते हुए भगवान्के द्वारा नित्यानित्य वस्तुके विवेचन-पूर्वक सांख्ययोग, कर्मयोग एवं स्थितप्रज्ञकी स्थिति और महिमाका प्रतिपादन ... २६०१

२७-(श्रीमद्भगवद्गीतायां तृतीयोऽध्यायः)

ज्ञानयोग और कर्मयोग आदि समस्त साधनोंके अनुसार कर्तव्य कर्म करनेकी आवश्यकताका प्रतिपादन एवं स्वधर्मपालनकी महिमा तथा कामनिरोधके उपायका वर्णन ... २६१२

२८-(श्रीमद्भगवद्गीतायां चतुर्थोऽध्यायः)

सगुण भगवान्के प्रभाव; निष्काम कर्मयोग तथा योगी महात्मा पुरुषोंके आचरण और उनकी महिमाका वर्णन करते हुए विविध यज्ञों एवं ज्ञानकी महिमाका वर्णन ... २६२३

२९-(श्रीमद्भगवद्गीतायां पञ्चमोऽध्यायः)

सांख्ययोग; निष्काम कर्मयोग; ज्ञानयोग एवं भक्तिसहित ध्यानयोगका वर्णन ... २६३६

३०-(श्रीमद्भगवद्गीतायां षष्ठोऽध्यायः)

निष्काम कर्मयोगका प्रतिपादन करते हुए आत्मोद्धारके लिये प्रेरणा तथा मनोनिग्रहपूर्वक ध्यानयोग एवं योगभ्रष्टकी गतिका वर्णन ... २६४५

३१-(श्रीमद्भगवद्गीतायां सप्तमोऽध्यायः)

ज्ञान-विज्ञान; भगवान्की व्यापकता; अन्य देवताओंकी उपासना एवं भगवान्को प्रभाव-सहित न जाननेवालोंकी निन्दा और जानने-वालोंकी महिमाका कथन ... २६५८

३२-(श्रीमद्भगवद्गीतायामष्टमोऽध्यायः)

ब्रह्म; अध्यात्म और कर्मादिके विषयमें अर्जुनके सात प्रश्न और उनका उत्तर एवं भक्तियोग तथा शुक्ल और कृष्ण मार्गोंका प्रतिपादन ... २६६५

३३-(श्रीमद्भगवद्गीतायां नवमोऽध्यायः)

ज्ञान; विज्ञान और जगत्की उत्पत्तिका; आसुरी और दैवी सम्पदावालोंका; प्रभावसहित भगवान्के स्वरूपका; सकाम-निष्काम उपासनाका एवं भगवद्-भक्तिकी महिमाका वर्णन ... २६७५

३४-(श्रीमद्भगवद्गीतायां दशमोऽध्यायः)

भगवान्की विभूति और योगशक्तिका तथा प्रभावसहित भक्तियोगका कथन; अर्जुनके पूछनेपर भगवान्द्वारा अपनी विभूतियोंका और योगशक्तिका पुनः वर्णन ... २६९१

३५-(श्रीमद्भगवद्गीतायामेकादशोऽध्यायः)

विश्वरूपका दर्शन करानेके लिये अर्जुनकी प्रार्थना; भगवान् और संजयद्वारा विश्वरूपका वर्णन; अर्जुनद्वारा भगवान्के विश्वरूपका देखा जाना; भयभीत हुए अर्जुनद्वारा भगवान्की स्तुति-प्रार्थना; भगवान्द्वारा विश्वरूप और चतुर्भुजरूपके दर्शनकी महिमा और केवल अनन्यभक्तिसे ही भगवान्की प्राप्तिका कथन २७०८

३६-(श्रीमद्भगवद्गीतायां द्वादशोऽध्यायः)

साकार और निराकारके उपासकोंकी उत्तमताका निर्णय तथा भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं भगवत्प्राप्तिवाले पुरुषोंके लक्षणोंका वर्णन ... २७२७

३७-(श्रीमद्भगवद्गीतायां त्रयोदशोऽध्यायः)

ज्ञानसहित क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ और प्रकृति-पुरुषका वर्णन ... २७३९

३८-(श्रीमद्भगवद्गीतायां चतुर्दशोऽध्यायः)

ज्ञानकी महिमा और प्रकृति-पुरुषसे जगत्की उत्पत्तिका; सत्त्व; रजः; तम—तीनों गुणोंका; भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं गुणतीत पुरुषके लक्षणोंका वर्णन ... २७५२

३९-(श्रीमद्भगवद्गीतायां पञ्चदशोऽध्यायः)

संसारवृक्षका; भगवत्प्राप्तिके उपायका; जीवात्माका; प्रभावसहित परमेश्वरके स्वरूपका एवं क्षर; अक्षर और पुरुषोत्तमके तत्त्वका वर्णन २७६२

४०-(श्रीमद्भगवद्गीतायां षोडशोऽध्यायः)

फलसहित दैवी और आसुरी सम्पदाका वर्णन तथा शास्त्रविपरीत आचरणोंको त्यागने और शास्त्रके अनुकूल आचरण करनेके लिये प्रेरणा २७६९

४१-(श्रीमद्भगवद्गीतायां सप्तदशोऽध्यायः)

श्रद्धाका और शास्त्रविपरीत धोर तप करनेवालोंका वर्णन; आहार; यज्ञ; तप और दानके पृथक्-पृथक् भेद तथा ॐ; तत्; सत्के प्रयोगकी व्याख्या २७७५

४२-(श्रीमद्भगवद्गीतायामष्टादशोऽध्यायः)

त्यागका; सांख्यसिद्धान्तका; फलसहित वर्ण-धर्मका; उपासनासहित ज्ञाननिष्ठाका; भक्तिसहित निष्काम कर्मयोगका एवं गीताके माहात्म्यका वर्णन ... २७८४

(भीष्मवधपर्व)

- ४३-गीताका माहात्म्य तथा युधिष्ठिरका भीष्म, द्रोण, कृप और शल्यसे अनुमति लेकर युद्धके लिये तैयार होना ... २८१३
 ४४-कौरव-पाण्डवोंके प्रथम दिनके युद्धका आरम्भ २८२१
 ४५-उभयपक्षके सैनिकोंका द्वन्द्व-युद्ध ... २८२३

- ४६-कौरव-पाण्डवसेनाका घमासान युद्ध ... २८२८
- ४७-भीष्मके साथ अभिमन्युका भयंकर युद्ध;
शल्यके द्वारा उत्तरकुमारका वध और
श्वेतका पराक्रम ... २८३१
- ४८-श्वेतका महाभयंकर पराक्रम और भीष्मके
द्वारा उसका वध ... २८३६
- ४९-शङ्खका युद्ध; भीष्मका प्रचण्ड पराक्रम तथा
प्रथम दिनके युद्धकी समाप्ति ... २८४३
- ५०-युधिष्ठिरकी चिन्ता; भगवान् श्रीकृष्णद्वारा
आश्वासन; धृष्टद्युम्नका उत्साह तथा द्वितीय
दिनके युद्धके लिये कौञ्चारुण व्यूहका निर्माण २८४६
- ५१-कौरवसेनाकी व्यूह-रचना तथा दोनों दलोंमें
शङ्खध्वनि और सिंहनाद ... २८५०
- ५२-भीष्म और अर्जुनका युद्ध ... २८५२
- ५३-धृष्टद्युम्न तथा द्रोणाचार्यका युद्ध ... २८५७
- ५४-भीमसेनका कलिंगों और निषादोंसे युद्ध;
भीमसेनके द्वारा शक्रदेव; भानुमान् और
केतुमान्का वध तथा उनके बहुतसे
सैनिकोंका संहार ... २८५९
- ५५-अभिमन्यु और अर्जुनका पराक्रम तथा दूसरे
दिनके युद्धकी समाप्ति ... २८६७
- ५६-तीसरे दिन—कौरव-पाण्डवोंकी व्यूह-रचना
तथा युद्धका आरम्भ ... २८७०
- ५७-उभयपक्षकी सेनाओंका घमासान युद्ध ... २८७१
- ५८-पाण्डव-वीरोंका पराक्रम; कौरव-सेनामें भगदड़
तथा दुर्योधन और भीष्मका संवाद ... २८७४
- ५९-भीष्मका पराक्रम; श्रीकृष्णका भीष्मको
मारनेके लिये उद्यत होना; अर्जुनकी प्रतिज्ञा
और उनके द्वारा कौरवसेनाकी पराजय;
तृतीय दिवसके युद्धकी समाप्ति ... २८७७
- ६०-चौथे दिन—दोनों सेनाओंका व्यूहनिर्माण
तथा भीष्म और अर्जुनका द्वैरथ-युद्ध ... २८८८
- ६१-अभिमन्युका पराक्रम और धृष्टद्युम्नद्वारा
शल्यके पुत्रका वध ... २८९१
- ६२-धृष्टद्युम्न और शल्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका
युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३
- ६३-युद्धस्थलमें प्रचण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका
भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यकि और
भूरिश्रवाकी मुठभेड़ ... २८९७
- ६४-भीमसेन और घटोत्कचका पराक्रम; कौरवोंकी
पराजय तथा चौथे दिनके युद्धकी समाप्ति ... २९००
- ६५-धृतराष्ट्र-संजय-संवादके प्रसङ्गमें दुर्योधनके द्वारा
पाण्डवोंकी विजयका कारण पूछनेपर भीष्मका
ब्रह्माजीके द्वारा की हुई भगवत्-स्तुतिका कथन २९०५
- ६६-नारायणावतार श्रीकृष्ण एवं नरावतार
अर्जुनकी महिमाका प्रतिपादन ... २९१०
- ६७-भगवान् श्रीकृष्णकी महिमा ... २९१३
- ६८-ब्रह्मभूतस्तोत्र तथा श्रीकृष्ण और अर्जुन-
की मङ्गला ... २९१५
- ६९-कौरवोंद्वारा मकरव्यूह तथा पाण्डवोंद्वारा
श्येनव्यूहका निर्माण एवं पाँचवें दिनके
युद्धका आरम्भ ... २९१६
- ७०-भीष्म और भीमसेनका घमासान युद्ध ... २९१८
- ७१-भीष्म; अर्जुन आदि योद्धाओंका घमासान युद्ध २९२०
- ७२-दोनों सेनाओंका परस्पर घोर युद्ध ... २९२३
- ७३-विराट-भीष्म; अश्वत्थामा-अर्जुन; दुर्योधन-
भीमसेन तथा अभिमन्यु और लक्ष्मणके
द्वन्द्वयुद्ध ... २९२५
- ७४-सात्यकि और भूरिश्रवाका युद्ध; भूरिश्रवाद्वारा
सात्यकिके दस पुत्रोंका वध; अर्जुनका पराक्रम
तथा पाँचवें दिनके युद्धका उपसंहार ... २९२८
- ७५-छठे दिनके युद्धका आरम्भ; पाण्डव तथा
कौरवसेनाका क्रमशः मकरव्यूह एवं कौञ्चव्यूह
बनाकर युद्धमें प्रवृत्त होना ... २९३१
- ७६-धृतराष्ट्रकी चिन्ता ... २९३३
- ७७-भीमसेन; धृष्टद्युम्न तथा द्रोणाचार्यका पराक्रम २९३५
- ७८-उभय पक्षकी सेनाओंका संकुलयुद्ध ... २९४०
- ७९-भीमसेनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय; अभिमन्यु
और द्रौपदीपुत्रोंका धृतराष्ट्रपुत्रोंके साथ
युद्ध तथा छठे दिनके युद्धकी समाप्ति ... २९४३
- ८०-भीष्मद्वारा दुर्योधनको आश्वासन तथा सातवें
दिनके युद्धके लिये कौरवसेनाका प्रस्थान ... २९४७
- ८१-सातवें दिनके युद्धमें कौरव-पाण्डव-सेनाओंका
मण्डल और वज्रव्यूह बनाकर भीष्म संघर्ष २९४९
- ८२-श्रीकृष्ण और अर्जुनसे डरकर कौरव-सेनामें
भगदड़; द्रोणाचार्य और विराटका युद्ध; विराट-
पुत्र शङ्खका वध; शिखण्डी और अश्वत्थामाका
युद्ध; सात्यकिके द्वारा अलम्बुषकी पराजय;
धृष्टद्युम्नके द्वारा दुर्योधनकी हार तथा भीमसेन
और कृतवर्माका युद्ध ... २९५२
- ८३-इरावान्के द्वारा विन्द और अनुविन्दकी पराजय;
भगदड़से घटोत्कचका हारना तथा मद्रराजपर
नकुल और सहदेवकी विजय ... २९५६

- ८४-युधिष्ठिरसे राजा श्रुतायुका पराजित होना;
युद्धमें चेकितान और कृपाचार्यका मूर्छित होना;
भूरिश्रवासे धृष्टकेतुका और अभिमन्युसे चित्रसेन
आदिका पराजित होना एवं सुशर्मा आदिसे
अर्जुनका युद्धारम्भ ... २९६०
- ८५-अर्जुनका पराक्रम; पाण्डवोंका भीष्मपर
आक्रमण; युधिष्ठिरका शिखण्डीको उपालम्भ
और भीमका पुरुषार्थ ... २९६४
- ८६-भीष्म और युधिष्ठिरका युद्ध; धृष्टद्युम्न और
सात्यकिसे साथ विन्द और अनुविन्दका
संग्राम; द्रोण आदिका पराक्रम और सातवें
दिनके युद्धकी समाप्ति ... २९६८
- ८७-आठवें दिन ब्यूहवद्ध कौरव-पाण्डव-सेनाओंकी
रणयात्रा और उनका परस्पर घमासान युद्ध २९७२
- ८८-भीष्मका पराक्रम; भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके
आठ पुत्रोंका वध तथा दुर्योधन और भीष्मकी
युद्धविषयक बातचीत ... २९७४
- ८९-कौरव-पाण्डव-सेनाका घमासान युद्ध और
भयानक जनसंहार ... २९७७
- ९०-हरावान्के द्वारा शकुनिके भाइयोंका तथा राक्षस
अलम्बुषके द्वारा हरावान्का वध ... २९८०
- ९१-घटोत्कच और दुर्योधनका भयानक युद्ध ... २९८५
- ९२-घटोत्कचका दुर्योधन एवं द्रोण आदि प्रमुख
वीरोंके साथ भयंकर युद्ध ... २९८७
- ९३-घटोत्कचकी रक्षाके लिये आये हुए भीम आदि
शूरवीरोंके साथ कौरवोंका युद्ध और उनका
पलायन ... २९९०
- ९४-दुर्योधन और भीमसेनका एवं अश्वत्थामा और
राजा नीलका युद्ध तथा घटोत्कचकी मायासे
मोहित होकर कौरवसेनाका पलायन ... २९९३
- ९५-दुर्योधनके अनुरोध और भीष्मजीकी आज्ञासे
भगदत्तका घटोत्कच; भीमसेन और पाण्डव-
सेनाके साथ घोर युद्ध ... २९९६
- ९६-हरावान्के वधसे अर्जुनका दुःखपूर्ण उद्धार;
भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके नौ पुत्रोंका वध;
अभिमन्यु और अम्बष्ठका युद्ध; युद्धकी
भयानक स्थितिका वर्णन तथा आठवें दिनके
युद्धका उपसंहार ... ३००१

- ९७-दुर्योधनका अपने मन्त्रियोंसे सलाह करके भीष्म-
से पाण्डवोंको मारने अथवा कर्णको युद्धके लिये
आज्ञा देनेका अनुरोध करना ... ३००७
- ९८-भीष्मका दुर्योधनको अर्जुनका पराक्रम बताना
और भयंकर युद्धके लिये प्रतिज्ञा करना तथा
प्रातःकाल दुर्योधनके द्वारा भीष्मकी रक्षाकी
व्यवस्था ... ३००९
- ९९-नवें दिनके युद्धके लिये उभयपक्षकी सेनाओं-
की ब्यूहरचना और उनके घमासान युद्धका
आरम्भ तथा विनाशसूचक उत्पातोंका वर्णन ३०१३
- १००-द्रौपदीके पाँचों पुत्रों और अभिमन्युका राक्षस
अलम्बुषके साथ घोर युद्ध एवं अभिमन्युके
द्वारा नष्ट होती हुई कौरवसेनाका युद्धभूमिसे
पलायन ... ३०१५
- १०१-अभिमन्युके द्वारा अलम्बुषकी पराजय;
अर्जुनके साथ भीष्मका तथा कृपाचार्य,
अश्वत्थामा और द्रोणाचार्यके साथ सात्यकिका
युद्ध ... ३०१८
- १०२-द्रोणाचार्य और सुशर्माके साथ अर्जुनका
युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार ३०२२
- १०३-उभय पक्षकी सेनाओंका घमासान युद्ध और
रक्तमयी रणनदीका वर्णन ... ३०२४
- १०४-अर्जुनके द्वारा त्रिगर्तोंकी पराजय; कौरव-
पाण्डव सैनिकोंका घोर युद्ध; अभिमन्युसे
चित्रसेनकी; द्रोणसे द्रुपदकी और भीमसेनसे
बाह्लीककी पराजय तथा सात्यकि और भीष्म-
का युद्ध ... ३०२७
- १०५-दुर्योधनका दुःशासनको भीष्मकी रक्षाके
लिये आदेश; युधिष्ठिर और नकुल-सहदेवके
द्वारा शकुनिकी युद्धसवार-सेनाकी पराजय
तथा शल्यके साथ उन सबका युद्ध ... ३०३०
- १०६-भीष्मके द्वारा पराजित पाण्डवसेनाका पलायन
और भीष्मको मारनेके लिये उद्यत हुए
श्रीकृष्णको अर्जुनका रोकना ... ३०३२
- १०७-नवें दिनके युद्धकी समाप्ति; रातमें पाण्डवोंकी
गुप्त मन्त्रणा तथा श्रीकृष्णसहित पाण्डवोंका
भीष्मसे मिलकर उनके वधका उपाय जानना ३०३६

- १०८-दसवें दिन उभयपक्षकी सेनाका रणके लिये प्रस्थान तथा भीष्म और शिखण्डीका समागम एवं अर्जुनका शिखण्डीको भीष्मका वध करनेके लिये उत्साहित करना ... ३०४५
- १०९-भीष्म और दुर्योधनका संवाद तथा भीष्मके द्वारा लाखों सैनिकोंका संहार ... ३०४९
- ११०-अर्जुनके प्रोत्साहनसे शिखण्डीका भीष्मपर आक्रमण और दोनों सेनाओंके प्रमुख वीरोंका परस्पर युद्ध तथा दुःशासनका अर्जुनके साथ घोर युद्ध ... ३०५१
- १११-कौरव-पाण्डवपक्षके प्रमुख महारथियोंके द्बन्द युद्धका वर्णन ... ३०५४
- ११२-द्रोणाचार्यका अश्वत्थामाको अशुभ शकुनोंकी सूचना देते हुए उसे भीष्मकी रक्षाके लिये धृष्टद्युम्नसे युद्ध करनेका आदेश देना ... ३०५८
- ११३-कौरवपक्षके दस प्रमुख महारथियोंके साथ अकेले घोर युद्ध करते हुए भीमसेनका अद्भुत पराक्रम ... ३०६१
- ११४-कौरवपक्षके प्रमुख महारथियोंके साथ युद्धमें भीमसेन और अर्जुनका अद्भुत पुरुषार्थ ... ३०६४
- ११५-भीष्मके आदेशसे युधिष्ठिरका उनपर आक्रमण तथा कौरव-पाण्डव-सैनिकोंका भीषण युद्ध ३०६७
- ११६-कौरव-पाण्डव-महारथियोंके द्बन्दयुद्धका वर्णन तथा भीष्मका पराक्रम ... ३०६९
- ११७-उभय पक्षकी सेनाओंका युद्ध; दुःशासनका पराक्रम तथा अर्जुनके द्वारा भीष्मका मूर्च्छित होना ... ३०७४
- ११८-भीष्मका अद्भुत पराक्रम करते हुए पाण्डव-सेनाका भीषण संहार ... ३०७८
- ११९-कौरवपक्षके प्रमुख महारथियोंद्वारा सुरक्षित होनेपर भी अर्जुनका भीष्मको रथसे गिराना, शरशय्यापर स्थित भीष्मके समीप हंसरूप-धारी ऋषियोंका आगमन एवं उनके कथनसे भीष्मका उत्तरायणकी प्रतीक्षा करते हुए प्राण धारण करना ... ३०८२
- १२०-भीष्मजीकी महत्ता तथा अर्जुनके द्वारा भीष्मको तर्किया देना एवं उभय पक्षकी सेनाओंका अपने शिविरमें जाना और श्रीकृष्ण-युधिष्ठिर-संवाद ... ३०८९
- १२१-अर्जुनका दिव्य जल प्रकट करके भीष्मजीकी प्यास बुझाना तथा भीष्मजीका अर्जुनकी प्रशंसा करते हुए दुर्योधनको संबोधित करने लिये समझाना ... ३०९३
- १२२-भीष्म और कर्णका रहस्यमय संवाद ... ३०९७



चित्र-सूची

(तिरंगा)

- १-संजयको दिव्य दृष्टि ... २५४६
- २-द्रोणाचार्यके प्रति दुर्योधनका सैन्य प्रदर्शन ... २५९७
- ३-देवताओं और मनुष्योंको प्रजापतिकी शिक्षा ... २६१४
- ४-सूर्यके प्रति नारायणका उपदेश ... २६२३
- ५-समदर्शिता ... २६४०
- ६-सबमें भगवद्-दर्शन ... २६५३
- ७-अर्थार्थी भक्त ध्रुव ... २६६१
- ८-आर्तभक्त द्रौपदी ... २६६२
- ९-ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ... २६६८
- १०-भक्तोंके द्वारा प्रेमसे दिये हुए पत्र, पुष्प, फल, जल आदिको भगवान् प्रत्यक्ष प्रकट होकर ग्रहण करते हैं ... २६८६
- ११-पुण्यात्मा ब्राह्मण सुतीक्ष्ण ... २६८९
- १२-राजर्षि अम्बरीष ... २६८९
- १३-भगवान्की प्रह्लाद आदि तीन विभूतियाँ ... २७०४
- १४-भगवान् विष्णु ... २७२४
- १५-भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुनके साथ विजय, विभूति, नीति और श्री ... २८१२
- १६-भीष्मपितामहपर भगवान् श्रीकृष्णकी कृपा ... २८१३